शोध प्रस्ताव

खोरठा साहित्यकार बंशीलाल बंशी का जीवन और साहित्य : एक अध्ययन

पीएच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप की रूपरेखा
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग,

संकाय : जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

राँची विश्वविद्यालय, राँची।

वर्ष–2025

शोध निर्देशक

डॉ अरविन्द कुमार
सहायक प्राध्यापक
विभागाध्यक्ष, खोरठा विभाग
डोरंडा कॉलेज, राँची
राँची विश्वविद्यालय,राँची
arvindkr8383@gmail.com
8789028431

शोधार्थी

पुष्पा कुमारी
यू.जी.सी.– नेट / जे.आर.एफ
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय,राँची
pkskargali@gmail.com
6203729386

शोध–प्रारूप

विषय : – खोरठा साहित्यकार बंशीलाल बंशी का जीवन और साहित्य : एक अध्ययन

भूमिका

प्रकृति का एक अनुपम उपहार है झारखंड। ऊँचे–नीचे टोंगरी–पहाड़, घाटियों नदी–झीलों–झरनों से भरे अनूठे भौगोलिक परिदृश्य से सुसज्जित और खनिज–वनज संपदा से आच्छादित इस खूबसूरत भू–खंड पर सदियों से तीन मानव प्रजाति के लोग सहअस्तित्व और सहकार के साथ निवास करते आ रहे हैं। जिन्हें सामान्यतः आदिवासी और सदान के नाम से जाना जाता है। कुल मिलाकर इन्हें झारखंड के मूल निवासी कहा जाता है। जिनके बीच भावों और विचारों के आदान–प्रदान के लिए तीन भाषा परिवार की मुख्यातः नौ भाषाएँ प्रयोग की जाती हैं। जिनमें ऑस्ट्रिक परिवार के अंतर्गत संताली, मुण्डारी, हो, खड़िया; द्रविड़ परिवार से कुडुख और आर्य परिवार के अंतर्गत खोरठा, कुरमाली, नागपुरी और पँचपरगनिया के नाम से प्रचलित है।

खोरठा झारखंड प्रदेश के सर्वाधिक विस्तृत भू–भाग में प्रचलित एक लोकप्रिय भाषा है। खोरठा मुख्यतः सदानों यानी गैर आदिवासी झारखंड के मूल निवासी और अनेक आदिवासी समुदायों की मातृभाषा है। इसका मुख्य क्षेत्र झारखंड का उत्तरी छोटानागपुर, संथालपरगना प्रमंडल है। इसके अलावे दक्षिणी छोटानागपुर और पलामु प्रमंडल के कुछ भागों में भी बोली जाती है। खोरठा के विद्वानों के अनुसार झारखंड के 15–16 जिलों के 46 हजार वर्ग किमी क्षेत्र में खोरठा भाषी निवास करतें हैं। 2011 जनगणना के आँकड़े के मुताबिक खोरठा भाषियों की संख्या 84 लाख है। जो किसी एक जाति–धर्म से नहीं बल्कि आदिवासी और सदान समुदाय की अनेक जातियों से आते हैं। सदियों से बोली के रूप में व्यवहार में रहनेवाली लोकभाषा खोरठा आज लिखित रूप में व्यवहार होने लगी है। पिछले चालीस साल से झारखंड में शिक्षा के क्षेत्र में भी मान्यता दी गई है। इसका लोक साहित्य काफी समृद्ध है। इसमें तीन सौ वर्षों से शिष्ट साहित्य लिखा जा रहा है। इस भाषा को सींचने और इसके साहित्य के विकास में अनेक कलमकारों ने अपना तन–मन–धन लगाया है। जिनमें से एक नाम बंशी लाल बंशी का है।

बंशी लाल बंशी जी का जन्म बोकारो जिले के चौफांद गाँव में 11 मार्च 1954 में एक किसान परिवार में हुआ था। आधुनिक काल के खोरठा साहित्य के एक प्रमुख स्तंभ थे। बोकारो

को खोरठा भाषा–साहित्य आंदोलन का केद्र बनाने में तीन व्यक्तियों का प्रमुख हाथ रहा है, ये तीन थे स्व. शिवनाथ प्रमाणिक, स्व.बंशी लाल बंशी और शांति भारत। इसलिए इन तीनों को खोरठा के त्रिमूर्ति कहा जाता था। इन तीनों में दो मूर्ति अब नहीं रहे। शांति भारत अभी भी खोरठा में सेवा दे रहे हैं। बंशी जी का निधन 18 फरवरी, 2022 में हो गया।

बंशी लाल बंशी ने साहित्य की कई विधाओं में रचना की। प्रारंभ में हिंदी में कविताएँ और लघुकथाएँ लिखा करते थे। खोरठा के प्रख्यात विद्वान ए. के झा के संपर्क में आने के बाद अपनी मातृभाषा की ओर उन्मुख हुए। तब से जीवन की आखिरी सांस तक खोरठा के लिए समर्पित रहे। खोरठा के विकास में इनका कई रूपों में योगदान है। साहित्य रचना के अलावा सांगठनिक और खोरठा की संस्थाओं के संचालन के लिए अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। बोकारो की प्रारंभिक खोरठा संस्था बोकारो खोरठा कमिटी के सचिव पद पर आपकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही थी। आपने न सिर्फ पद का निष्ठापूर्वक निर्वाह किया बल्कि अपने आवास में इसका कार्यालय बनाया था। बंशी लाल बंशी जी ने साहित्य की कई विधाओं में उत्कृष्ट खोरठा रचनाएँ की हैं। जो संकलनों, पत्र–पत्रिकाओं या विभिन्न कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों में प्रकाशित हैं। आकाशवाणी राँची से भी कई कविताएँ प्रसारित होती रही थीं। बहुत सी रचनाएँ अभी भी अप्रकाशित हैं।

बंशी लाल बंशी जी के प्रकाशित साहित्यिक ग्रंथ –

1. खोरठा दर्पण (खोरठा भाषा–संस्कृति–संक्षिप्त परिचय)
2. डींड़ाक डोंआनी (खंड–काव्य)
3. कइर के देखवा (कहानी संग्रह)

जिन महत्वपूर्ण पुस्तकों में बंशी लाल बंशी जी की रचनाएँ शामिल हैं और संपादक मंडल के सदस्य भी रहे –

1. खोरठा गइद–पइद संगरह (इंटरमीडियट की खोरठा पाठ्यपुस्तक) में 'चासा' कहानी।
2. एक पथिया डोंगल महुआ (इंटरमीडियट की खोरठा पाठ्यपुस्तक) माटिक मइल धोवा रे।
3. दू डाइर जिरहुल फूल (दशम् कक्षा की पुस्तक)दामुदर–पारसनाथ बाँउड़ी डहर जातरा

4. दू डाइर परास फूल (कक्षा नवम् की पुस्तक) में आलेख और कविता शामिल।
5. रूसल पुटुस संकलन में कविता प्रकाशित।
6. तितकी, इंजोर, सहर होगी, छोटानागपुर रश्मि, झारखंड संवाद, आदि पत्र–पत्रिकाओं में कविता, कहानी, आलेख, समीक्षा, रिपोर्ताज, लघुकथा आदि का प्रकाशन।
   खोरठा लोककथा, खोरठा लोक साहित्य एवं खोरठा की समस्त पाठ्यपुस्तकों में संपादक मंडल के सदस्य के रूप में योगदान।

शोध की प्रेरणा :–

खोरठा भाषा साहित्य के विकास में अनेक तरह से लंबे समय तक सक्रिय योगदान करने वाले खोरठा के प्रमुख साहित्यकार स्व. बंशी लाल बंशी जी पर अभी तक किसी ने शोध कार्य नहीं किया है। डॉ श्यामा प्रसाद विश्वविद्यालय में खोरठा से एम. ए. करने के दौरान बंशीलाल बंशी जी के जीवन के विविध पहलुओं और साहित्यिक योगदान के प्रति मेरी जिज्ञासा हुई थी। जो इनपर शोध कार्य करने की मेरी प्रथम प्रेरणा बनी। बाद में यूजीसी का नेट और जेआरएफ परीक्षा पास करने के बाद मुझे अपने शोध कार्य हेतु एक शोध विषय की आवश्यकता हुई तो मैंने स्व. बंशी लाल बंशी जी के जीवन और साहित्य पर शोध का विचार किया। इस संदर्भ में मैंने अपने गुरूजनों से परामर्श किया तो उन्होंने सहमति दी। जिनमें राँची विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर खोरठा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ कुमारी शशि, सहायक प्राध्यापक डॉ अर्चना कुमारी, डॉ. निरंजन कुमार, डॉ नकुल कुमार, डॉ दिनेश कुमार दिनमणि के बहुमूल्य सुझाव ने मुझे इस विषय पर कार्य करने के लिए विशेष प्रेरणा मिली। साथ ही इस विषय पर शोध प्रारूप को सुव्यवस्थित रूप देने में काफी सहयोग और मार्गदर्शन मिला। इस संदर्भ में मेरे शोध निर्देशक बनने की सहमति देकर मुझे अनुगृहित करनेवाले आदरनीय गुरुजी डॉ. अरविन्द कुमार, सहायक प्राध्यापक, डोरंडा कॉलेज, राँची मेरे इस शोध योजना के सबसे बड़े उत्प्रेरक बने हैं, जिनकी मैं आभारी हूँ।

शोध की परिकल्पना :–

परिकल्पना शब्द परि+कल्पना दो शब्दों के मेल से बना है। परि का अर्थ है– चारों ओर तथा कल्पना का अर्थ है चिंतन। इस प्रकार परिकल्पना से तात्पर्य किसी समस्या से संबंधित समस्त संभावित समाधान पर विचार करना है।

इस शोध कार्य से खोरठा के एक बड़े साहित्यिक विभूति के जीवन के उन पहलुओं को जानने एवं संकलित करने की कोशिश करना चाहूंगी, जो कि समाज के लिए उपयोगी होगा। साथ ही यह जानने का प्रयास होगा कि किस तरह की परिस्थितियों में गाँव के एक साधारण किसान परिवार का बेटा साहित्यकार बनकर अपनी मातृभाषा और मानवता की सेवा की ओर उन्मुख हुआ और इतनी ख्याति अर्जित की। इनके समस्त जीवन का संघर्ष क्या रहा, कौन–कौन से प्रसंग और पड़ाव आए जो उल्लेखनीय हैं। साहित्य के अतिरिक्त और किन क्षेत्रों में इनकी सक्रियता रही, इसे भी जानने एवं संकलित करने की कोशिश करूंगी।

इस शोध का दूसरा पहलू बंशीलाल बंशी का साहित्य का अवलोकन–विवेचन है। मेरी परिकल्पना है कि प्रस्तावित शोध में मैं बंशी जी के समस्त साहित्य का अवलोकन कर उनकी स्थिति, साहित्यिक महत्व, साहित्य में निहित भावगत और कलागत मूल्य का विवेचन करने का प्रयास करूंगी। यह भी जानना चाहूंगी कि साहित्य की किन–किन विधाओं में बंशी जी की लेखनी चली थी और किस–किस विधा में उनका विशेष योगदान रहा है। साथ ही यह जानने का भी प्रयास होगा कि बंशी जी का खोरठा भाषा–साहित्य के विकास में क्या–क्या, किस तरह का और कितने दिनों का योगदान रहा है। इस संदर्भ में कितने प्रकार की भूमिका निभाई हैं। खोरठा साहित्य में उनका क्या स्थान और सम्मान है इस बात को जानना भी इस शोध की परिकल्पना में है।

शोध का उद्देश्य :–

- खोरठा भाषा एवं साहित्य का गहन अध्ययन करना।
- खोरठा भाषा साहित्य संस्कृति, इतिहास, सांस्कृतिक धरोहर, जनजीवन का परिज्ञान होगा तथा साथ ही आम लोगों में जन चेतना का संचार होगा।
- खोरठा भाषा का उद्भव एवं विकास का अध्ययन करना।
- आधुनिक खोरठा साहित्यकार बंशी लाल बंशी के जीवन और साहित्य पर प्रकाश पड़ेगा।
- झारखण्ड में रहने वाले लोगों के जीवन–दर्शन एवं मनोवृति का पता चलेगा, साथ ही इस क्षेत्र मे रहने वाले सदान एवं आदिवासियों के परस्पर भाईचारा का भी ज्ञान होगा।

शोध का महत्व

किसी कार्य के प्रतिफल की उपयोगिता से ही उस कार्य का महत्व होता है। मेरे प्रस्तावित शोधकार्य के संभावित महत्व को निम्नांकित विंदुओं में देखा जा सकता है –

- झारखंड की प्रमुख लोकभाषा के एक प्रमुख साहित्यकार के जीवन और साहित्य के बारे में प्रामाणिक विवेचित सामग्री जिज्ञासु लोगों को एक ग्रंथ में मिल पाएगी।
- बड़े साहित्यकारों का जीवन भी प्रेरणादायी होता है। बंशी लाल बंशी जी खोरठा के बड़े साहित्यकार थे। इनके जीवन के आदर्शों और प्रेरक प्रसंगों से भावी पीढ़ी लाभ ले सकेगी।
- खोरठा के विकास में विशिष्ट योगदान देने वाले व्यक्तित्व के इस संदर्भ में किये गये कामों को वर्तमान और आनेवाली पीढ़ियाँ जान सकेगी।
- बंशी लाल बंशी के संपूर्ण खोरठा साहित्य से खोरठा समाज के साथ ही अन्य लोग परिचित हो सकेगे।
- बंशी लाल बंशी के संपूर्ण साहित्य में निहित विचारों और संदेशों से समाज अवगत हो सकेगा।
- बंशी लाल बंशी के संपूर्ण खोरठा साहित्य में निहित साहित्यिक मूल्यों से साहित्य समाज परिचित हो सकेगा।
- खोरठा एक भारतीय भाषा है। इसके साहित्य और इसके साहित्यकारों पर शोधात्मक दस्तावेज अंततः भारतीय साहित्य पर एक दस्तावेज होगा।
- इस शोध से खोरठा के पाठकों विद्यार्थियों–शोधार्थियों को अपने संबंधित अध्ययन के लिए प्रामाणिक सामग्री मिल पाएगी

शोध का समाज में प्रभाव :–

प्रस्तुत शोध को पूरा करने पर प्रकाशित होने से समाज पर इसका साकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

- बंशी लाल बंशी के जीवन और साहित्य के प्रकाश में आने पर समस्त खोरठा भाषा–भाषियों के समाज में साहित्य के प्रति सम्मान और जागृति की लहर आयेगी।

- व्यक्तिगत कार्यों के गुण गरिमा के कारण सामाजिक कार्यों की गुण गरिमा बढ़ेगी।
- खोरठा समाज के साथ सभी भाषा समाज के दिग्गज साहित्यकरों के जीवन और साहित्य को प्रकाश में लाने के लिए भावी पीढ़ी का मनोबल बढ़ेगा।
- शोध के प्रकाश में आने पर झारखंड ही नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र के क्षेत्रीय भाषाओं के यशस्वी रचनाकारों के योगदानों को प्रकाश में लाने की प्रेरणा मिलेगी।

शोध विधि

- विवरणात्मक विधि
- साक्षात्कार विधि
- वर्णनात्मक विधि
- विश्लेषणात्मक विधि
- तुलनात्मक विधि

उपकरण

- मोबाईल
- कैमरा
- कम्प्यूटर
- इंटरनेट
- टेप रिकार्डर
- टंकण मशीन
- पेन ड्राइव

शोध प्रारूप

शोध का विषय : खोरठा साहित्यकार बंशीलाल बंशी का जीवन और साहित्य : एक अध्ययन

- भूमिका
- प्रेरणा
- परिकल्पना
- उदेश्य
- उपादेयता
- शोध प्रविधि

अध्यायीकरण

प्रथम अध्याय

खोरठा भाषा का सामान्य परिचय

(क) खोरठा भाषा का सामान्य परिचय

(ख) खोरठा भाषा की मुख्य विशेषताएँ

(ग) खोरठा भाषा का क्षेत्र–विस्तार और भाषा–भाषी

(घ) खोरठा में साहित्य लेखन की परंपरा

द्वितीय अध्याय

बंशी लाल बंशी का जीवनवृत

(क) पारिवारिक पृष्ठभूमि

(ख) जन्म

(ग) बाल्यवस्था

(घ) किशोरावस्था

(ङ) युवावस्था

(च) शिक्षा

(छ) विवाह

(ज) नौकरी (बोकारो इस्पात संयंत्र) सेवानिवृत

तृतीय अध्याय

बंशी लाल बंशी की वैयक्तिक विशेषताएँ

1. बाह्य विशेषताएँ

(क) धीर –गंभीर

(ख) आतिथ्य करने वाले

(ग) कपड़ों के शौकिन

(घ) संग्रह वृत्ति

(ङ) कुशल कृषक

2. आन्तरिक विशेषताएँ

(क) स्वाभिमान व निर्भयता

(ख) न्यायप्रियता व कर्त्तव्य परायणता

(ग) अध्ययनशील विद्वान

(घ) दृढ़ निश्चयी

(ङ) शालीन आचरण

(च) उदार हृदय

(छ)गृहस्त की विवशता

(ज) संगीतज्ञ एवं संगीत प्रेम

(झ) प्रकृति प्रेम

(ञ) मृदुभाषी

चतुर्थ अध्याय

समाजिक जीवन के विविध आयाम

(क) सामाजिक गतिविधियाँ

(ख) साहित्यिक गतिविधियाँ

(ग) सांस्कृतिक गतिविधियाँ

(घ) सांगठनिक गतिविधियाँ

पंचम अध्याय

बंशीलाल बंशी के खोरठा पद्य साहित्य का परिचय और विशेषताएँ

(क) प्रबंधकाव्य – **'डींड़ाक डोंआनी'**।
काव्य सौंदर्य और विशेषताएँ।

(ख) स्फुट/मुक्तक काव्य
संकलनों तथा पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित स्फुट/मुक्तक काव्य रचनाओं की विशेषताएँ।

षष्ठ अध्याय

बंशीलाल बंशी के खोरठा गद्य साहित्य का परिचय और विशेषताएँ।

1. कथा साहित्य – कहानी व लघुकथा

   (क) एकल कहानी संग्रह– **कइर के देखवा**

   (ख) संकलनों एवं पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित

2. कथेतर साहित्य –

   (क) निबंध, आलेख

   (ख) यात्रावृत्तांत

   (ग) समीक्षा–समालोचना

सप्तम अध्याय

1. खोरठा भाषा–साहित्य के विकास में बंशीलाल बंशी की विविध भूमिका

(क) रचनाकार के रूप में

(ख) खोरठा आंदोलन के सहभागी के रूप में

(ग) संगठन के पदधारी के रूप में।

(घ) संपादन में सहभागिता

2. खोरठा साहित्य जगत में बंशीलाल बंशी का स्थान

(क) पद, पदवी, उपाधि, सम्मान।

शोध निष्कर्ष

परिशिष्ट :

संदर्भ ग्रंथों की सूची

आधार ग्रंथों की सूची

खोरठा पत्र–पत्रिकाएँ

साक्षात्कार

चित्रावली

(नोटः आवश्यकता अनुसार शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्तन प्रार्थनीय होगा।)

शोध निर्देशक

डॉ अरविन्द कुमार

सहायक प्राध्यापक

अध्यक्ष, खोरठा विभाग

डोरंडा कॉलेज, राँची

राँची विश्वविद्यालय, राँची।

शोधार्थी

पुष्पा कुमारी

यू. जी. सी.– नेट/जे.आर.एफ

स्नातकोत्तर खोरठा विभाग,

राँची विश्वविद्यालय, राँची।

आधार ग्रंथों की सूची : –

1. कुमारी डॉ अर्चना खोरठा का शिष्ट साहित्यः एक अध्ययन, 2015 प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन (राँची)।

2. दांगी डॉ. आनंद किशोर खोरठा कवियों का काव्यगत परिचय, 2018 झारखंड झरोखा, 2018।

3. ओहदार डॉ बी. एन. खोरठा भाषा एवं साहित्य, उद्भव एवं विकास, मर्गदर्शन पब्लिकेशन, 2017।

4. ओहदार डॉ बी. एन. सम्पूर्ण खोरठा भाषा एवं साहित्य, 2018 मार्गदर्शन पब्लिकेशन।

5. बंशी लाल बंशी खोरठा दर्पण 1995 बोकारो खोरठा कमिटी।

6. दिनमणि डॉ. दिनेश कुमार : टोटल खोरठा 2021, शिवांगन पब्लिकेशन, राँची।

7. प्रभाकर डॉ गजाधर महतो : खोरठा भाषा एवं साहित्य, 2020 सफल प्रकाशन, राँची।

8.महतो तारकेश्वर : खोरठाक घरडिंड़ा 2021 प्रकाशक– माय माटी उलगुलान।

––––00––––

संदर्भ ग्रंथों की सूची : –

1. झा ए के (प्रधान संपादक) : खोरठा गइद–पइद संगरह 1989, बोकारो खोरठा कमिटी, बोकारो।
2. झा ए के (प्रधान संपादक) : दू डाइर परास फूल, 2010, खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद्, बोकारो।
3. झा ए के (प्रधान संपादक) : दू डाइर परास फूल 2014, खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद्, रामगढ़।
4. बंशी लाल बंशी : खोरठा दर्पण, 1995 बोकारो खोरठा कमिटी बोकारो।
5. बंशी लाल बंशी : डींड़ाक डोंआनी, 1998, खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद्, बोकारो।
6. बंशी लाल बंशी : कइर के देखवा, 2019, खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद्, बोकारो।
7. महतो संतोष कुमार : एक पथिया डोंगल महुआ, 2005 रामधन प्रकाशन, गांगजोरी।

––00––

खोरठा पत्र–पत्रिकाएँ

1. मातृभाषा, श्रीनिवास पानुरी, बरवाअड्डा, धनबाद, 1957
2. खोरठा, श्रीनिवास पानुरी, बरवाअड्डा, धनबाद,1970
3. तितकी, विश्वनाथ दसौंधी 'राज', कतरासगढ़, धनबाद, 1977
4. करील, डॉ० बी०एन० ओहदार, कतरासगढ़ धनबाद, 1977
5. इंजोर, धनजंय प्रसाद, मधुपूर दवेघर, 1997
6. लुआठी, आकाशखूंटी, गिरिधारी गोस्वामी, बालीडीह, बोकारो, 1999
7. सहिया, अनिल कुमार 'विस्थापित', बोकारो, 2002
8. सहिदान, कुशवाह, मरीक फाल्गुनी, गिरीडीह, 2002
9. तितकी, झा, डॉ० ए० के०, ढांकी क्षेत्र खोरठा कमिटी, रामगढ़
10. परास फुल, प्रबुद्ध, महेन्द्र, धनबाद, 2009